प्र–6 सामाजिक विज्ञान एवं सामाजिक अध्ययन में अन्तर क्या है।

What is the difference between social science and social studies?

उत्तर प्रायः यह धारणा है कि सामाजिक अध्ययन तथा सामाजिक विज्ञान का एक ही अर्थ है। यह अन्तर बाहय रूप से नही दिखाई देता है। क्योंकि दोनो ही मानवीय सम्बन्धों का अध्ययन करते है। इनमें जो अन्तर पाया जाता है, वह गहनता, स्तर एवं प्रयोजन के दृष्टिकोण से है। सामाजिक विज्ञान मानवीय सम्बन्धों का उच्चत्तर एवं विद्वतापूर्ण अध्ययन है जिसमें अनुसंधान खोज तथा प्रयोग के लिए स्थान है। परन्तु सामाजिक अध्ययन विद्यालय पाठ्क्रम का वह अंग है जिसमें विज्ञान के तत्वों विधियों तथा शोधों को सरलतम रूप में शिक्षण की सुविधानुसार रखा जाता है।

सामाजिक विज्ञान एवं सामाजिक अध्ययन में अन्तर निम्न प्रकार है–

क्र.सं.	सामाजिक विज्ञान	सामाजिक अध्ययन
1.	विषय वस्तु का बौद्धिक स्तर उच्च होता है।	विषय वस्तु का बौद्धिक स्तर सामाजिक विज्ञान की अपेक्षा निम्न होता है।
2.	सामाजिक विज्ञान वयस्कों के लिए है।	सामाजिक अध्ययन विद्यालय के बालकों के लिए हैं।
3.	सामाजिक विज्ञान का क्षेत्र विस्तृत होता है।	सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र सामाजिक विज्ञान की अपेक्षा संकुचित है।
4.	सामाजिक विज्ञान सैद्धान्तिक अधिक है।	सामाजिक अध्ययन अधिक व्यावहारिक है।
5.	सामाजिक विज्ञान का मुख्य तत्व विद्वता एवं सामाजिक उपयोगिता है।	सामाजिक अध्ययन का मुख्य तत्व निदेशात्मक उपयोगिता है।
6.	सामाजिक विज्ञान का अध्ययन करना ऐच्छिक है।	सामाजिक अध्ययन अनिवार्य विषय है।

वेस्ले ने इन दोनो में अन्तर स्पष्ट करते हुए लिखा है, सामाजिक विज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन दोनों मानवीय सम्बन्धों की विवेचना करते हैं, परन्तु प्रथम प्रौढ़ावस्था पर तथा दूसरा बालकों के स्तर पर अतः यह स्पष्ट है कि सामाजिक अध्ययन मूलतः सामाजिक विज्ञानों से ही अपनी विषयवस्तु ग्रहण करता है। सामाजिक अध्ययन सामाजिक विज्ञान है जिसको निर्देशात्मक अभिप्रायों के लिए सरलीकृत एवं संगठित किया गया है। अतः सामाजिक विज्ञानों तथा सामाजिक अध्ययन में दार्शनिक या सैद्वान्तिक अन्तर नही है वरन् केवल व्यावहारिक एवं सुविधा के दृष्टिकोण से अन्तर है।

दृष्टिकोण से अन्तर है।

प्र–7 सामाजिक अध्ययन का अर्थ बताते हुए परिभाषित कीजिए।

What is the meaning of social study desine it?

उत्तर सामाजिक अध्ययन शब्द दो शब्दों के मेल से बना है। इसमें सभी सामाजिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। इससे तात्पर्य है समाज का समाज के लिए समाज द्वारा अध्ययन अर्थात् समाज सम्बन्धी सभी संस्थाओं व संगठनों का अध्ययन जिससे की प्रगति होती है। अध्ययन शब्द से तात्पर्य है प्राप्त ज्ञान को व्यावहारिक रूप से जीवन में प्रयुक्त करना। इस प्रकार हम कह सकते है कि सामाजिक अध्ययन मानव के सभी दृष्टिकोण का सम्पूर्ण अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसे मानव सभ्यता के विकास की श्रृंखला समझा जाता है। इसका स्वरूप जटिल तथा विशाल है। इसमें सभी सामाजिक संस्थाओं व संगठनों के विकास का अध्ययन किया जाता है। यह मानव जीवन के भूतकाल, वर्तमान तथा भविष्य का अध्ययन करवाता है। इसमें सभी विषय राजनीति शास्त्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, नागरिकशास्त्र, इतिहास, भूगोल के आधारभूत सिद्धान्तों का अध्ययन किया जाता है।

इस प्रकार यह एक एकीकृत विषय है, जिसकी सामग्री मानव ज्ञान एवं अनुभवों पर आधारित है।

सामाजिक अध्ययन की प्रमुख परिभाषाएँ

1. **माइकेलिस के अनुसार**– "सामाजिक अध्ययन सामाजिक एवं भौतिक वातावरण से सम्बन्धित क्रियाओं का अध्ययन है"।
2. **वेस्ले के अनुसार**– "सामाजिक अध्ययन सामाजिक विज्ञान के आधारभूत तत्वों का अध्ययन है"।
3. **जे.एफ. फोरेस्टर के अनुसार**– "सामाजिक अध्ययन उस समाज का अध्ययन है जिसमें रहकर छात्रों का सर्वांगीण विकास होता है"।
4. **जारोलमिक के अनुसार**–"सामाजिक अध्ययन मानवीय सम्बन्धों का अध्ययन है"।

5. **बाइनिंग तथा बाइनिंग**– "सामाजिक अध्ययन की सामग्री विद्यार्थियों को विश्व को समझाने का आधार प्रस्तुत करती है। उनमें विशिष्ट कुशलताओं की आदतों का प्रशिक्षण देती है। तथा उनमें अभिवृतियों तथा आदतों का विकास करती है जिससे कि वे प्रभावी सदस्य के रूप में अपना स्थान बना सके"।
6. **कोठारी शिक्षा आयोग**– "सामाजिक अध्ययन पढ़ाने का उद्देश्य छात्र को अपने पर्यावरण का ज्ञान, मानव सम्बन्ध को समझने की शक्ति और कुछ अभिवृतियों तथा मूल्यों के जो कि लोगों, राज्य, राष्ट्र और विश्व के मामलों में बुद्विमतापूर्वक भाग लेने के लिए अपरिहार्य है प्राप्त करने में सहायता देना है"।

प्र–8 माध्यमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन शिक्षण के मुख्य उद्देश्य क्या है?

What is the main aim of teaching social studies at secondary level?

उत्तर माध्यमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उद्देश्य निम्न होने चाहिए–

1. **मानव सभ्यता की बुनियादी एकता का ज्ञान**– इसी स्तर पर विद्यार्थियों को बताया जाना चाहिए कि देखने में सभ्यताएँ अलग–अलग दिखाई देती है परन्तु वस्तुत उनमें बुनियादी एकता विद्यमान है। इसी बुनियादी एकता के आधार पर विश्व संस्कृति तथा वसुधैव कुटुम्बकम की कल्पना की गई है।
2. **परिवर्तन प्रकिया का ज्ञान**– माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को परिवर्तन प्रक्रिया का ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिए। उसे इस तथ्य से अवगत कराना चाहिए कि परिवर्तन जीवन प्रक्रिया का शाश्वत नियम है। वर्तमान युग तक पहुँचते–पहुँचते मानव समाज और जीवन में कई प्रकार के परिवर्तन हुए है।
3. **विभिन्न संस्कृतियों के प्रशंसात्मक दृष्टिकोण का विकास**– वर्तमान मानव संस्कृति आज जिस विकास को पहुँची हुई है किसी एक जाति या देश का कार्य नही बल्कि विभिन्न संस्कृतियों के सहयोग से इसका विकास हुआ है। इसी तथ्य के आधार पर विद्यार्थियों में संसार की विभिन्न संस्कृतियों के प्रति प्रशंसात्मक दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए।
4. **लोकतन्त्र की आवश्यकता**– मनुष्य के व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास के लिए लोकतन्त्र का होना अत्यन्त आवश्यक है। लोकतन्त्र केवल शासन विधि नही है बल्कि जीवन विधि भी है। आज विश्व के लगभग सभी देश लोकतन्त्र को मान्यता दे चुके है। इसी स्तर पर विद्यार्थियो को यह अनुभव कराना चाहिए।
5. **अन्तर्राष्ट्रीय भावना का विकास**– माध्यमिक स्तर तक पहुँचते पहुँचते छात्रों मे उतनी योग्यता विकसित हो जाती है कि वे अपने देश के बाहर के लोगो में रूचि ले सके। उन्हे समझाया जा सकता है कि विश्व के सभी देश एक दूसरे पर निर्भर है। सभी देशो ने किसी न किसी रूप में मानव कल्याण के विकास में सहयोग दिया है। विश्व संस्कृति के विकास में विश्व के दार्शनिकों एवं विचारकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और आज प्रत्येक देश विश्व को विनाशात्मक युद्ध से बचाने के लिए प्रयत्नशील है।